प्लान

डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8th Road North
Ahmadi - 61008
Kuwait

उसने गाड़ी पोरटिको से बाहर निकाली। काफी गर्मी थी गाड़ी के आउट साइड टम्प्रेचर 48 डिग्री बता रहा था। उसने कार का ए0सी0 चला दिया। कितनी तेज़ धूप है उसने सोचा जैसे बदन झुलस जाये। घर से निकल कर सिर्फ कार में बैठने में उसे जो धूप लगी थी उस से गर्मी की शिद्दत का अंदाज़ा हो गया। वह सिडनी से कुवैत कुछ महीने पहले आया था। क्या कुदरत का निज़ाम है उसने सोचा। सिडनी में जून जुलाई में शदीद सर्दी का मौसम होता है। और यहाँ कुवैत में इन्ही महीनों में ज़बरदस्त गरमी, उसने सोचा यहाँ आके हर तरह की फैसेलटीज़ हैं। आफिस, कार, घर शापिंग सेन्टर सब ही तो एयर कन्डीशन है। सिर्फ एक दो मिनट के लिये जो बाहर निकलना पड़ता है उसी में बुरा हाल हो जाता है ऐसे में जब वह इधर उधर नज़र दौड़ाता है इतनी शदीद गर्मी और धूम में..... मज़दूरों को काम करता हुआ देखता था। हर तरफ़ Construction का काम। ऊंची बिल्डिंग बन रही हैं और उस में उन मज़दूरों का पसीना निकल निकल कर जज़ब हो रहा था। ये मज़दूर कितनी जान तोड़ मेहनत करते हैं सिर्फ इस लिये कि वहाँ उनके मुल्क में उन के बीवी बच्चे और उन से मुताल्लिक़ लोग सुकून से ज़िन्दगी गुज़ार सकें। इस अरब के तेल से उन के घर तो रौशन हो रहे थे लेकिन शायद उन के घर वालों को अंदाज़ा न हो कि अपने घरों को रौशन करने के लिये उन मज़दूरों का बदन का तेल कितना जलता होगा। जब उस ने घर के फाटक से बाहर गाड़ी निकाली तो उसे दो आदमी फाटक से थोड़ी दूर पर लगे एक दरख़्त के साये में खड़े नज़र आये। जो उसके घर की तरफ़ देख रहे थे। थोड़ी दूर पर बस स्टैण्ड था जहाँ उन मज़दूरों की बसैं उन्हे लेने और छोड़ने आती रहती थीं। उस ने सोचा ये दोनों आदमी बस स्टैण्ड ही जा रहे होंगे। और थोड़ी देर दरख़्त के साये में खड़े हो गये होंगे। वहाँ से काफ़ी दूर उन मज़दूरों के कैम्प थे जहाँ वो सब रहते थे। उस ने सोचा वो दोनो अगर अपने कैम्प जा रहे होंगे तो वो उन्हे छोड़ देगा। उस ने दरख़्त के पास गाड़ी रोक दी और गाड़ी का शीशा खोल कर उस ने कहा आ जाओ गाड़ी में बैठ जाओ कहाँ जाना है मैं तुम लोगों को छोड़ दूंगा। वो दोनों गाड़ी में बैठ गये थे। वो दोनों मज़दूर तो लग रहे थे लेकिन बाक़ी मज़दूरों की तरह इतने फटे हाल नहीं। बदन पर कुछ बेहतर कपड़े थे। किस कैम्प में रहते हो मैं वहाँ तक छोड़ दूंगा। नहीं सर हम तो फहील में रहते हैं वहाँ किसी दुकान मे मुलाज़िम हैं, यहाँ अहमदी किसी काम से आये थे। अब वापस जा रहे हैं। अच्छा चलो तुम लोगों को फहील ही में छोड़ दूंगा।

उसकी कार फहील में दाख़िल हो रही थी किस तरफ़ तुम्हारी दुकान है मैं वहीं उतार दूंगा। नहीं सर यहीं किनारे पर उतार दीजिये हम लोग चले जायेंगे। नहीं कोई बात नहीं काफी तेज़ धूप है मैं दुकान तक छोड़ दूंगा उस ने दोबारा कहा। नहीं नहीं हमें यहीं उतार दीजिये अब की दोनों एक साथ बोले थे, उस ने गाड़ी गिनारे करके फुटपाथ के पास रोक दी थी। वह दोनों गाड़ी से इतनी जल्दी निकले कि उस का शुक्रिया अदा करना भी भूल गये। फिर वह थोड़ी दूर जाकर रूक गये।

कार वाला गाड़ी यू0 टर्न ले कर वापस जा रहा था।

यार मंगलू जो मैं सोच रहा हूँ क्या तू भी वहीं सोच रहा है। हाँ मैं भी वहीं सोच रहा हूँ। पिछले कई साल से हम लोग यहाँ कुवैत में हैं। आज ये पहला आदमी है जिस ने हमें कार में लिफ़्ट दी। यार में तो बहुत परेशान हो गया था जब उसने कहा था कि दुकान तक छोड़ दूंगा। हाँ मैं भी बहुत परेशान था कोई दुकान होती तो बताते। तू अब क्या प्लान है। प्लान अब बदल गया। यानि अब हम लोग उस आदमी के घर चोरी नहीं करेंगे। दोनों एक साथ बोले थे।

★★★